हरियाणवी लोक साहित्य में स्त्री–चेतना

साक्षी,
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

हरियाणवी लोक साहित्य उत्तर भारतीय लोक परंपरा की एक सशक्त सांस्कृतिक धरोहर है, जिसमें ग्रामीण जीवन के संघर्ष, सामाजिक संरचना और मानवीय संवेदनाएँ जीवंत रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। इस लोक साहित्य में स्त्री की स्थिति केवल परंपरागत गृहिणी या सहनशील पात्र तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक यथार्थ से जूझती, प्रश्न करती और प्रतिरोध की चेतना विकसित करती हुई दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध आलेख में हरियाणवी लोकगीतों, लोककथाओं, सांगों, रागनियों, कहावतों और लोकोक्तियों के माध्यम से स्त्री–चेतना के विविध आयामोंकृजैसे विवाह–संस्था, प्रेम, श्रम, पारिवारिक संबंध, सामाजिक अन्याय तथा आत्मसम्मानकृका विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हरियाणवी लोक साहित्य में स्त्री–चेतना अनुभवजन्य, सहज और सामाजिक यथार्थ से संबद्ध है, जो आधुनिक स्त्री विमर्श की पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करती है।

बीज शब्द: *हरियाणवी लोक साहित्य, स्त्री–चेतना, लोकगीत, लोककथा, पितृसत्ता, सामाजिक यथार्थ*

प्रस्तावना

लोक साहित्य किसी भी समाज की सामूहिक चेतना का प्रामाणिक दस्तावेज होता है। यह वह साहित्य है जो लिखित परंपरा से पूर्व और समानांतर मौखिक रूप में पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है। हरियाणवी लोक साहित्यकृजिसमें लोकगीत, सांग, किस्से, रागनियाँ, कहावतें और लोकोक्तियाँ सम्मिलित हैंकृहरियाणा के ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और सामाजिक संरचना को अभिव्यक्त करता है।[1]

हरियाणा का समाज ऐतिहासिक रूप से पितृसत्तात्मक रहा है, जहाँ पुरुष को सामाजिक सत्ता का केंद्र माना गया है। इस संरचना में स्त्री की भूमिका गृहस्थी, श्रम और वंश–परंपरा तक सीमित की गई। किंतु लोक साहित्य के सूक्ष्म अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री केवल मूक सहनशील पात्र नहीं है, बल्कि वह अपने जीवनानुभवों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को समझने और व्यक्त करने वाली चेतनशील इकाई भी है।[2]

हरियाणवी लोक साहित्य में स्त्री–चेतना किसी संगठित वैचारिक आंदोलन का परिणाम नहीं है, बल्कि यह जीवन की कठोर परिस्थितियों से उपजी हुई सहज चेतना है। यही कारण है कि यह चेतना अधिक यथार्थपरक, संवेदनशील और सामाजिक धरातल से जुड़ी हुई दिखाई देती है।

स्त्री–चेतना : अवधारणात्मक आधार

स्त्री–चेतना से अभिप्राय स्त्री के उस आत्मबोध से है जिसके माध्यम से वह अपने सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत अस्तित्व को पहचानती है। यह चेतना स्त्री को केवल परंपराओं का अनुसरण करने वाली इकाई नहीं, बल्कि प्रश्न

करने वाली, तर्क करने वाली और प्रतिरोध करने वाली शक्ति के रूप में स्थापित करती है।ङ

भारतीय संदर्भ में स्त्री–चेतना का विकास आधुनिक काल में नारीवादी आंदोलनों के साथ जुड़ा हुआ माना जाता है, किंतु लोक साहित्य में इसकी उपस्थिति कहीं अधिक प्राचीन और स्वाभाविक है। लोक साहित्य में स्त्री–चेतना किसी वैचारिक घोषणापत्र के रूप में नहीं, बल्कि गीत, कथा और कहावतों के माध्यम से भावनात्मक और प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त होती है।

हरियाणवी लोक साहित्य में स्त्री–चेतना

हरियाणवी लोक साहित्य में लोकगीतों की परम्परा सुदीर्घ रही है। इनमें विवाह संबंधी लोकगीतों में स्त्री की विदाई, भय, अनिश्चित भविष्य और भावनात्मक पीड़ा मार्मिक रूप में अभिव्यक्त होती है–

"बाबुल म्हारे छोड़ चल्या,

परदेसी हो गई छोरी।"

यह गीत स्त्री की विवशता के साथ–साथ उसके आत्मबोध को भी उजागर करता है, जहाँ वह अपने अस्तित्व में आए परिवर्तन को समझती है।

सास–बहू गीतों में बहू का स्वर केवल सहनशील नहीं, बल्कि तर्कपूर्ण और व्यंग्यात्मक भी है–

"सासू जी का राज घणा,

बहू की बात न पूछे।"

यह अभिव्यक्ति पारिवारिक सत्ता–संरचना के प्रति स्त्री की आलोचनात्मक चेतना को दर्शाती है।

हरियाणवी प्रेम गीतों में स्त्री प्रेम और जीवनसाथी के चयन को लेकर स्पष्ट दृष्टि रखती हैकृ "मैं ब्याहूं उसी तैं,/ जो मनैं भा जावे।" यह लोक अभिव्यक्ति स्त्री की निर्णय क्षमता और भावनात्मक स्वतंत्रता को रेखांकित करती है।

हरियाणवी लोक गीतों के साथ ही लोककथाओं में भी अनेक स्त्री पात्र अपनी बुद्धि, धैर्य और साहस से न केवल पारिवारिक अन्याय का समाधान करती हैं बल्कि सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देती हैं तथा अपनी प्रतिष्ठा और अस्मिता की रक्षा करती हैं। यहाँ स्त्री नैतिक रूप से सशक्त पात्र के रूप में उभरती है। लोककथाओं में पतिव्रता स्त्री की अवधारणा केवल आज्ञाकारिता तक सीमित नहीं रहती। वह पति को अन्याय से रोकने और सही मार्ग पर लाने वाली चेतनशील इकाई के रूप में प्रस्तुत होती है।

हरियाणवी कहावतें सामाजिक सोच को प्रतिबिंबित करती हैं। यद्यपि कुछ कहावतें स्त्री के प्रति रूढ़ दृष्टिकोण प्रकट करती हैं, फिर भी कई कहावतें स्त्री की भूमिका को स्वीकारती हैंकृ "घर की लक्ष्मी, घर संभाले।" यह कथन स्त्री के आर्थिक, भावनात्मक और सामाजिक योगदान को मान्यता देता है।

हरियाणवी लोक साहित्य में स्त्री का श्रमकृखेती, पशुपालन और गृहकार्यकृसमानांतर रूप से चित्रित हुआ हैकृ "खेतां में मैं काम करूं,/ घर–आंगण भी संभालूं।" यह स्त्री के बहुआयामी श्रम और आत्मसम्मान की सशक्त अभिव्यक्ति है।

हरियाणवी लोक साहित्य में स्त्री–चेतना के साथ–साथ पितृसत्तात्मक सोच, सहनशीलता का महिमामंडन और स्त्री–विरोधी धारणाएँ भी मौजूद हैं। इससे स्पष्ट होता है कि यह साहित्य संक्रमणशील चेतना को प्रस्तुत करता है, जहाँ परंपरा और प्रतिरोध साथ–साथ चलते हैं।

पितृसत्ता, अंतर्विरोध और सीमाएँ

यह कहना अनुचित होगा कि हरियाणवी लोक साहित्य पूर्णतः स्त्री–मुक्त या नारीवादी चेतना से युक्त है। इसमें पितृसत्तात्मक सोच के अनेक रूप स्पष्ट रूप से मौजूद हैं। स्त्री से अपेक्षित

सहनशीलता, त्याग और आज्ञाकारिता का महिमामंडन कई गीतों और कथाओं में देखा जा सकता है। किन्तु इसी के साथ–साथ लोक साहित्य में ऐसे स्वर भी हैं जो इन अपेक्षाओं पर प्रश्न उठाते हैं। यही अंतर्विरोध इस साहित्य की विशेषता है। यह समाज की वास्तविक स्थिति को प्रतिबिंबित करता है, जहाँ परंपरा और परिवर्तन साथ–साथ चलते हैं। स्त्री–चेतना यहाँ किसी क्रांतिकारी विद्रोह के रूप में नहीं, बल्कि धीरे–धीरे विकसित होने वाली जागरूकता के रूप में सामने आती है। यही कारण है कि यह चेतना अधिक टिकाऊ और यथार्थपरक प्रतीत होती है।

आधुनिक स्त्री विमर्श के संदर्भ में हरियाणवी लोक साहित्य

आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श एक सशक्त वैचारिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ है। इसके संदर्भ में यदि हरियाणवी लोक साहित्य को देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि लोक स्त्री की चेतना आधुनिक विमर्श की पूर्वपीठिका तैयार करती है। लोक साहित्य में स्त्री अपने जीवन की समस्याओं को जिस सहजता और प्रामाणिकता से व्यक्त करती है, वही आगे चलकर आधुनिक स्त्री लेखन का आधार बनती है। इस दृष्टि से हरियाणवी लोक साहित्य केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि स्त्री–अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत भी है।

निष्कर्ष

हरियाणवी लोक साहित्य में स्त्री–चेतना जीवन–संघर्ष से उपजी, यथार्थपरक और भावनात्मक है। यह चेतना आधुनिक नारीवादी विमर्श की पूर्वपीठिका तैयार करती है। स्त्री यहाँ पीड़िता भी है, कर्मशील श्रमिक भी; विचारशील व्यक्तित्व भी और प्रतिरोध की प्रतीक भी। इस प्रकार हरियाणवी लोक साहित्य स्त्री–अध्ययन और लोक–सांस्कृतिक शोध के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

संदर्भ

1. पाण्डेय, रामनरेश — लोक साहित्य का समाजशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
2. सिंह, सत्यव्रत — हरियाणवी लोक साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।
3. दुबे, श्यामाचरण — भारतीय लोक संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. वर्मा, सविता —लोकगीतों में नारी चेतना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. शर्मा, ओमप्रकाश —हरियाणा की लोक परंपराएँ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
6. Tripathi, G. N. — Folklore and Feminine Consciousness in India] Oxford University Press